कफ़न के कपड़ों के साथ चलना यह कैसा महसूस होता है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

यूहन्ना 11:44

“जो मरा हुआ था वह बाहर निकल आया; उसके हाथ-पाँव पट्टियों से बँधे थे और उसका मुँह कपड़े से ढका हुआ था। यीशु ने उनसे कहा,
‘उसे खोल दो और जाने दो।’”

हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में नमस्कार। आज हम लाज़रुस की कहानी से एक बहुत ही महत्वपूर्ण आत्मिक शिक्षा सीखना चाहते हैं—उस लाज़रुस से जिसे मृत्यु से जिलाया गया।

जैसा कि हम जानते हैं, लाज़रुस मर चुका था, दफ़नाया जा चुका था, और उसका शरीर सड़ने लगा था। परन्तु जब यीशु कब्र के पास आए, तो उन्होंने एक अद्भुत चमत्कार किया—उन्होंने लाज़रुस को फिर से जीवन दिया।

जब लाज़रुस कब्र से बाहर आया, तो वह पूरी तरह जीवित और स्वस्थ था। लेकिन यीशु यहीं नहीं रुके। उन्होंने एक स्पष्ट आज्ञा दी: “उसे खोल दो और जाने दो।”
यह हमें दिखाता है कि पुनरुत्थान—नया जीवन—अपने आप में पर्याप्त नहीं है। सच्ची स्वतंत्रता के लिए बाँधों का खुलना

कफ़न के कपड़ों के साथ चलना यह कैसा महसूस होता है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

आवश्यक है।

लाज़रुस के जी उठने के बाद भी, उसके हाथ, पाँव और मुँह पर कफ़न के कपड़े बँधे हुए थे। ये कपड़े उस पुराने जीवन का प्रतीक थे जिसे वह पीछे छोड़ चुका था। जब तक वे कपड़े हटाए नहीं गए, वह स्वतंत्र रूप से चल-फिर नहीं सकता था।

इसका हमारे लिए क्या अर्थ है?

उद्धार पुनरुत्थान के समान है। जब हम यीशु पर विश्वास करते हैं, तो हम आत्मिक रूप से जीवित हो जाते हैं—मृत्यु से जी उठते हैं। फिर भी, बहुत से मसीही अपने पुराने जीवन के “कब्र के कपड़े” साथ लिए चलते रहते हैं—पुरानी आदतें, भय, कड़वाहट, रंजिशें और कमजोरियाँ। जब तक हम इनसे मुक्त नहीं होते, ये हमें आगे बढ़ने से रोकती रहती हैं।

हाथों, पाँवों और चेहरे को ढकने वाले ये कफ़न के कपड़े मकड़ी के जाल के समान हैं। ये हमारी गति, हमारी दृष्टि और हमारी स्वतंत्रता को रोक देते हैं। बहुत से विश्वासी, उद्धार के बाद भी, दर्द, ईर्ष्या, क्रोध, कड़वाहट, भय और चिंता से संघर्ष करते रहते हैं। वे आगे नहीं बढ़ पाते, क्योंकि वे खुलना नहीं चाहते।

यीशु ने कहा: “उसे खोल दो और जाने दो।”

कफ़न के कपड़ों के साथ चलना यह कैसा महसूस होता है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

उन्होंने यह नहीं कहा, “खुद को खोल लो।”
अक्सर सच्ची स्वतंत्रता के लिए हमें दूसरों की सहायता और मार्गदर्शन को स्वीकार करना पड़ता है।

इसी कारण परमेश्वर ने कलीसिया की स्थापना की:

ताकि ऐसे पास्टर और आत्मिक मार्गदर्शक हों जो हमें भोजन दें, मार्गदर्शन करें और परिपक्व होने तक हमारी देखभाल करें।
ताकि हम संगति में जीवन बिताएँ, क्योंकि अकेले मसीही जीवन जीने की कोशिश करना ऐसा है जैसे अभी भी कफ़न के कपड़े पहने चलना।

परमेश्वर चाहता है कि उद्धार के बाद हम फल लाएँ। हर विश्वासी के लिए ज़िम्मेदारियाँ और सेवकाई के काम हैं। लेकिन यदि हमारे हाथ, पाँव और चेहरे अब भी पुरानी आदतों से बँधे हैं, तो हम उसके उद्देश्य को कैसे पूरा कर सकते हैं?

वास्तव में स्वतंत्र होने के लिए:

शिक्षा और सुधार को स्वीकार करें।
प्रार्थना और मार्गदर्शन को स्वीकार करें।
अन्य विश्वासियों के साथ संगति को स्वीकार करें।
मिलकर वचन पढ़ें, प्रार्थना करें और सेवा करें।

ये सब बातें हमें “खुलने” में सहायता करती हैं। यदि हम अकेले चलने की कोशिश करें और पुराने जीवन की जंजीरों को पकड़े रहें, तो केवल उद्धार से स्थायी आत्मिक फल उत्पन्न नहीं हो सकता।

कफ़न के कपड़ों के साथ चलना यह कैसा महसूस होता है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

कभी-कभी हमारे सपने और दर्शन भी पूरे नहीं हो पाते, क्योंकि हमारे पाँव बँधे होते हैं—हम आगे नहीं बढ़ पाते। कफ़न के कपड़ों से उतना ही डरिए जितना आप मृत्यु से डरते हैं।

यदि आप अपने जीवन में ऐसी आदतें या व्यवहार देखते हैं जो मसीह में आपके नए जीवन के विरुद्ध हैं, तो अब समय है उनसे निपटने का। आज्ञाकारी बनिए, मार्गदर्शन को स्वीकार कीजिए, और अपने उद्धार को कार्यरूप देने की ज़िम्मेदारी लीजिए। इस प्रक्रिया में हर विश्वासी की एक भूमिका होती है।

प्रभु आपको आशीष दें।
इस संदेश को दूसरों के साथ साझा करें।

यदि आप अपने जीवन में यीशु को स्वीकार करने में सहायता चाहते हैं, तो इस लेख के नीचे दिए गए संपर्क पर हमसे संपर्क करें। प्रभु आपको आशीष दें।

Share on:
WhatsApp